

Padma Shri



SHRI MAITYA RAM REANG

Shri Maitya Ram Reang is a folk performer and folk artist from Tripura. He is known for his significant contribution to Hojagiri dance and Bru folk songs. Hojagiri dance is usually performed by young girls in a group of six balancing on earthen pitcher with bottle placed on their head, flipping the plates and spinning the winnow basket (bailing) on their fingertips according to the rhythm of flute, drum and the song sang live on stage.

2. Born on 1st February, 1943 in Dashami Reang Para, South Tripura, Shri Reang was very talented and sharp learner however; he could not get formal education as he was far away from good schools due to geographical location. Born and brought up in Bru (Reang) community he was fond of music and dance. At the age of 12, he started singing folk songs and formed his group.

3. Shri Reang has been performing in traditional festivals of his community since his childhood. He is considered to be one of the most accomplished performers of the Hojagiri dance and Bru folk songs. A large number of young people of his tribe have been trained by him. Together with a number of proficient musicians and dancers, he has founded a Lokaranjan Shakha. He dedicated work in preserving and promoting the traditional Hojagiri dance of the Reangs has been recognized by the people of the region, and by various institutions in north-eastern India. Together with members of his troupe, he has travelled widely within the country. He has also performed in Russia and other countries.

4. Shri Reang has received Sangeet Natak Akademi Award for his contribution to the folk dance and music of Tripura in 2004.



श्री मैत्यराम रियांग

श्री मैत्यराम रियांग त्रिपुरा के एक लोक कलाकार हैं। उन्हें होजागिरि नृत्य और ब्रू लोक गीतों में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए जाना जाता है। होजागिरि नृत्य आम तौर पर छह युवतियों के समूह में किया जाता है, जिसमें वे मिट्टी के घड़े के ऊपर अपने सिर पर बोतल के साथ संतुलन बनाते हुए नृत्य करती हैं और बांसुरी, ड्रम और मंच पर लाइव गाए जा रहे गीत की ताल पर थालियां और सूप घुमाती हैं।

2. 1 फरवरी, 1943 को दशमी रियांग पारा, दक्षिणी त्रिपुरा में जन्मे श्री रियांग बहुत प्रतिभाशाली और तीक्ष्ण बुद्धि के धनी थे, लेकिन भौगोलिक स्थिति के कारण अच्छे स्कूल उनके घर से बहुत दूर थे, इसलिए वे औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। ब्रू (रियांग) समुदाय में जन्मे और पले-बढ़े होने के कारण उन्हें संगीत और नृत्य का शौक था। उन्होंने 12 वर्ष की आयु से लोक गीत गाना शुरू कर दिया और अपना ग्रुप बना लिया।

3. श्री रियांग बचपन से ही अपने समुदाय के पारंपरिक त्योहारों में प्रदर्शन करते रहे हैं। उन्हें होजागिरि नृत्य और ब्रू लोक गीतों का एक निष्णात कलाकार माना जाता है। उन्होंने अपनी जनजाति के बहुत से युवाओं को प्रशिक्षण दिया है। कई दक्ष संगीतकारों और नर्तकों के साथ मिलकर उन्होंने लोकरंजन शाखा की स्थापना की है। रियांग समुदाय के पारंपरिक होजागिरि नृत्य को संरक्षित रखने और बढ़ावा देने में उनकी लगन और समर्पण की उस क्षेत्र के लोगों और पूर्वोत्तर भारत के कई संस्थानों ने सराहना की है। उन्होंने अपनी मंडली के साथ पूरे देश का भ्रमण किया है। उन्होंने रूस और दूसरे देशों में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया है।

4. श्री रियांग को वर्ष 2004 में त्रिपुरा के लोक नृत्य और संगीत में उनके योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी प्रदान किया गया।